EDU Journal of International Affairs and Research (EJIAR), ISSN: 2583-9993
Volume 3, Issue 2, April-June, 2024, Available at: https://edupublications.com/index.php/ejiar

स्त्रियों के समाज में समाहित होने के लिए आवश्यक नीतियों और कार्यक्रमों का अध्ययन

श्रीमती मंजू सुगंधी[1], डॉ. अमन अहमद[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़
[2]सहायक प्राध्यापक, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

सारांश

समाज में एक महत्वपूर्ण सदस्य बनने के लिए महिला को कई समस्याओं, बाधाओं और अवरोधों से गुजरना पड़ा। अतीत में, महिला के पास किसी भी तरह के अधिकार नहीं थे, वह अलग-थलग थी, उपेक्षित थी और पुरुषों द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। नारीवाद के आने से, महिला की छवि और प्रोफ़ाइल पूरी तरह से बदल गई है और वह पुरुष के हाथों की कठपुतली से रानी, राष्ट्रपति, कलाकार और शिक्षिका बन गई है... यह शोध प्रबंध समाज में अपनी स्थिति बदलने के लिए महिला की इच्छाओं, सपनों और क्षमता की जांच करता है, न कि केवल एक बेटी, पत्नी या माँ के रूप में बल्कि नियमित अधिकारों और कर्तव्यों के साथ एक सामान्य नागरिक के रूप में। यह शोध कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करता है: हाल के शोध और आँकड़े जो राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं के अलावा आर्थिक विकास, सांस्कृतिक उथल-पुथल जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महिला भागीदारी के महत्वपूर्ण विकास की पुष्टि करते हैं। इस शोध से मुख्य निष्कर्ष यह निकला कि नारीवादी प्रयास कई मायनों में कारगर रहे, जिससे महिलाओं की स्थिति और भूमिका में बहुत बड़ा बदलाव आया। वे सभी रूढ़िवादी छवियों को हटाने में सफल रहे और उन्हें राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकार देकर समाज में अधिक महत्व दिया।

मुख्य शब्द: नारीवाद, दुर्व्यवहार, कठपुतली, रूढ़िवादी, छवियों

परिचय

पहले के समय में, समाज में महिलाओं का हर संभव तरीके से शोषण किया जाता था। उन्हें बहुत आलोचना झेलनी पड़ती थी, स्वतंत्रता की कमी थी और वे पुरुषों के बराबर नहीं थीं। उन्हें मनुष्य होने के मूल अधिकारों से भी वंचित रखा जाता था। उन्हें "नारी शक्ति" की छाप छोड़ने और समाज में एक

महत्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए बहुत प्रयास और साहस की आवश्यकता थी। चार्लोट ब्रॉंटे जैसी कवयित्रियों ने महिलाओं को प्रेरित करते हुए कहा, "मैं कोई पक्षी नहीं हूँ और न ही कोई जाल मुझे फँसा सकता है, मैं एक स्वतंत्र इच्छा वाली स्वतंत्र इंसान हूँ।" इसके माध्यम से उन्होंने यह बताने की कोशिश की कि महिलाओं को अब पिंजरे में बंद पक्षियों की तरह नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि उन्हें पुरुषों के समान स्वतंत्रता और अवसर दिए जाने चाहिए। समाज के ऐसे सहायक वर्गों ने उन विकासों को जन्म दिया जो आज के समाज में महिलाओं की बेहतर स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं।

समाज के सभी पहलुओं में महिलाओं की पूर्ण और समान भागीदारी एक मौलिक मानव अधिकार है। फिर भी, दुनिया भर में, राजनीति से लेकर मनोरंजन तक और कार्यस्थल तक, महिलाओं और लड़कियों का प्रतिनिधित्व काफी हद तक कम है।

नीचे दिए गए दृश्य समय के साथ इस लिंग-असंतुलित तस्वीर पर करीब से नज़र डालते हैं, जिससे पता चलता है कि प्रगति कितनी धीमी है। पितृसत्तात्मक मानदंडों और परंपराओं में निहित, इसके परिणाम महिलाओं और लड़कियों, उनके परिवारों और बड़े पैमाने पर समुदाय के व्यक्तिगत, आर्थिक और भविष्य की भलाई पर हानिकारक, नकारात्मक परिणामों के साथ दूरगामी हैं। सभ्यता के परिसर में उनके कथित सख्त घरेलू कामों से लेकर आज ग्रह पर सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्तित्वों में से एक होने तक, महिलाओं की स्थिति युगों से बहुत विकसित हुई है। आज हम जिस दुनिया का अनुभव कर रहे हैं, वह हमारे माता-पिता द्वारा अनुभव की गई दुनिया से नाटकीय रूप से अलग है, हमारे दादा-दादी द्वारा अनुभव की गई दुनिया की तो बात ही छोड़िए। मैं अपने माता-पिता और दादा-दादी की पीढ़ियों के बारे में बात कर रहा हूँ, बस इस तथ्य को इंगित करने के लिए कि जब वे छोटे थे, तब वास्तव में बहुत समय पहले नहीं था, फिर भी दुनिया भर में समाज ने बड़े बदलावों का अनुभव किया है। प्राचीन समय में, प्रारंभिक मानव जाति और प्रारंभिक सभ्यताओं के मुख्य सामाजिक समूह अपने समाज की मातृसत्तात्मक व्यवस्था का पक्ष लेते थे। इसका मतलब है कि महिलाएँ सचमुच सबसे आगे थीं; वे समाज के केंद्र में थे और विभिन्न दृष्टिकोणों और नजरियों से प्रमुख भूमिका निभाते थे।

प्राचीन दुनिया में, महिलाएँ राजनीतिज्ञ, आध्यात्मिक और धार्मिक नेता, योद्धा और सम्माननीय प्रतीक, उर्वरता और समृद्धि की प्रतीक थीं। कहीं न कहीं, प्रारंभिक सामाजिक समूहों की महिला प्रधान संस्कृति मातृसत्तात्मक सेटिंग से पितृसत्तात्मक सेटिंग में बदल गई, जिसका अर्थ है कि पुरुषों ने "आगे की पंक्ति की सीट ली" और नेता, राजा बन गए। हजारों सालों से, हमारे समाज पर पुरुषों का वर्चस्व रहा है; सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से। अधिकांश मानवविज्ञानी मानते हैं कि कोई भी ज्ञात समाज ऐसा नहीं है जो स्पष्ट रूप से मातृसत्तात्मक हो। यह एक बहुत ही प्रसिद्ध तथ्य है कि तब से

महिलाओं को समान दर्जा नहीं दिया गया है, सदियों से कभी भी पुरुषों के समान पद पर नहीं रखा गया है, लेकिन हमेशा अधीनता की विशेषता वाली "छोटी" भूमिकाएँ निभाई हैं। बहुत से लोग भाषा और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ते हुए आसानी से संवाद कर सकते हैं, जैसा कि इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। इंटरनेट किसी भी अन्य संचार माध्यम की तुलना में अधिक दरवाजे खोल रहा है; यह न केवल लोगों के बीच एक-दूसरे के बीच संवाद करने का एक तरीका है, बल्कि विचारों को फैलाने, संस्कृति को फैलाने, चर्चा करने और हाँ, काम करने और मनोरंजन करने का भी एक तरीका है।

इसने नए दरवाज़े खोले हैं, खिड़की खोली है जिसके माध्यम से अधिक सक्रिय सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहित किया जा सकता है, और पर्दा प्रथा, घरेलू हिंसा आदि जैसी सदियों पुरानी सामाजिक बाधाओं को तोड़ने में मदद की जा सकती है जो आसानी से दिखाई नहीं देती हैं। सबसे पहले, अगर दो लिंगों के बीच वैश्विक समानता पर चर्चा की जानी है, तो इसे बहुत सावधानी से किया जाना चाहिए। इस समानता की डिग्री दुनिया के क्षेत्र के साथ-साथ समाज, धर्म और कई अन्य सामाजिक कारकों के आधार पर बहुत भिन्नता से गुजरती है जो आधुनिक समाज की असमान लिंग भूमिकाओं को प्रभावित करती हैं।

राजा राम मोहन राय द्वारा महिलाओं की पुरुषों के अधीनता और भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर ब्रिटिश प्रभाव के खिलाफ चलाए गए आंदोलन के बाद महिलाओं की स्थिति में एक बार फिर बदलाव आया। हालांकि, महात्मा गांधी के प्रबुद्ध नेतृत्व में ही महिलाओं ने पुरुषों के साथ अपनी समानता को फिर से स्थापित किया। गांधी के आह्वान पर उन्होंने अपना घूंघट त्याग दिया और अपने भाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने के लिए अपने घरों की चारदीवारी से बाहर निकल आईं। इसका परिणाम यह है कि आज भारतीय संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर का दर्जा दिया है। पुरुष और महिला के बीच कोई भेदभाव नहीं है। सभी पेशे उन दोनों के लिए खुले हैं, जिनमें चयन का एकमात्र मानदंड योग्यता है। नई-नई मिली आजादी के परिणामस्वरूप भारतीय महिलाओं ने राजनेता, वक्ता, वकील, डॉक्टर, प्रशासक और राजनयिक के रूप में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है।

साहित्य समीक्षा

अग्रवाल, रुचि (2014).अधिकांश समाजों में पुरुषों को कमाने वाले के रूप में देखा जाता था, जबकि महिलाओं की भूमिका एक अच्छी गृहिणी और एक अच्छी माँ होने तक ही सीमित थी। यह भारत के अत्यधिक पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं पर लागू होता है। जैसे-जैसे समाज आधुनिकीकरण की

दुनिया में प्रवेश कर रहे थे, महिलाओं की भूमिका नाटकीय रूप से बदल गई। मीडिया ने समाजों के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज की आधुनिक दुनिया में महिलाओं की छवि को बहुत प्रभावित किया। विभिन्न समाजों में महिलाओं की भूमिका पर कई शोध किए गए हैं। हालांकि, विभिन्न दशकों में महिलाओं को बदलती भूमिकाओं में चित्रित करने में फिल्मों के महत्व और सामान्य रूप से समाजों पर इसके प्रभाव के बारे में बहुत कम कहा गया है। पिछले दशकों में, भारतीय सिनेमा ने फिल्मों के माध्यम से महिलाओं को चित्रित करने के तरीके में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा है। समकालीन फिल्में महिलाओं को अधिक स्वतंत्र, आत्मविश्वासी और करियर उन्मुख के रूप में चित्रित करती हैं

बेडे, पॉल. (2015). अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका, खास तौर पर विकासशील देशों में, का व्यापक अध्ययन किया गया है। हालाँकि इस पर प्रकाशित कुछ कार्यों की पक्षपातपूर्ण आलोचना की गई है क्योंकि यह नारीवादी समूहों से उत्पन्न हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विकास प्रक्रिया में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है (इहिमोदु, 1996)। संयुक्त राष्ट्र (1993) के अनुसार, महिलाएँ दुनिया की आबादी का बहुमत हैं, लेकिन उन्हें इसके अवसरों और लाभों का केवल एक छोटा हिस्सा ही मिलता है। "यह आगे जोर देता है कि दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता पुरुषों के बराबर हो। इसका मतलब है कि महिलाएँ आम तौर पर 'कमज़ोर लिंग' होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट (1989) में कहा गया है कि दुनिया के हर तीन घरों में से एक में कमाने वाली महिला है। यह दर्शाता है कि कई घर घर, बच्चों और बुज़ुर्गों की ज़िम्मेदारी के मामले में पूरी तरह से महिलाओं पर निर्भर हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में ज़्यादातर काम महिलाओं द्वारा किया जाता है। वे समाज के सामान्य कल्याण के लिए स्थानीय जीवन स्थितियों और पर्यावरण के महत्व को पहचानती हैं। इस बात के भी संकेत हैं कि महिलाएँ पुरुषों की तुलना में ज़्यादा परोपकारी हो सकती हैं। दूसरे शब्दों में, वे दूसरों की ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों से पहले रखती हैं। इसका मतलब है कि बजट तैयार करने के चरण के दौरान कमज़ोर समूहों सहित दूसरों की ज़रूरतों के प्रति महिलाओं के ग्रहणशील होने की संभावना ज़्यादा होती है।

दुर्भाग्य से, विकास प्रक्रिया में महिलाओं के योगदान को कम करके आंका गया है। आधिकारिक आँकड़े शायद ही कभी इन योगदानों को मापते हैं। यह स्पष्ट है कि न केवल अवैतनिक घरेलू ज़िम्मेदारियाँ उनके काम का प्रतिनिधित्व करती हैं। महिलाओं की हथियार बनाने और विपणन गतिविधियाँ निम्न आय वाले ग्रामीण परिवारों की भलाई में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उप-सहारा अफ्रीका में, महिलाएँ 70% से 75% खाद्य फ़सलों का उत्पादन करती हैं। हालाँकि IFAD (1993) के अनुसार उनकी उत्पादकता पुरुषों की तुलना में काफी कम है (औसतन लगभग 10%-15%), लेकिन अगर आर्थिक

रूप से उत्पादक संसाधनों तक पहुँच और उन पर नियंत्रण के मामले में मौजूदा लैंगिक असंतुलन के मद्देनजर इन आँकड़ों पर विचार किया जाए तो उनकी क्षमताएँ काफ़ी हैं। उनकी संभावित उत्पादकता का लाभ उठाते हुए, महिलाओं की स्थिति में सुधार से खाद्य उत्पादन में काफ़ी वृद्धि होगी। इससे, निस्संदेह, पूरे क्षेत्र में खाद्य असुरक्षा के कारणों में से एक को काफ़ी हद तक कम किया जा सकेगा (कांकवेंडा एट अल, 2000)।

उद्देश्य

1. स्त्रियों के समाज में समाहित होने के लिए आवश्यक नीतियों और कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
2. स्त्रियों की आर्थिक स्वावलंबनता और उनके सामाजिक उत्थान को समर्थन करने के लिए उपायों का प्रस्तावन करना।

कार्यप्रणाली

संदर्भ तथ्य संग्रह:
इस कार्य का प्रारंभिक चरण संदर्भ सांग्रह के साथ शुरू होगा , जो स्त्री पात्रों की विभिन्न भूमिकाओं , समाजिक परिवेश, और रूढ़िवादी चुनौतियों के संदर्भ में सूचना एकत्र करेगा।

गहराई से अध्ययन:
इस चरण में , संदर्भ सांग्रह की जानकारी का गहराई से अध्ययन किया जाएगा , जिसमें स्त्री की भूमिकाओं, रूढ़िवादिता के परिणाम, और चुनौतियों का विश्लेषण किया जाएगा।

शोध का निर्माण:
इस चरण में , शोध का निर्माण किया जाएगा , जिसमें संदर्भ सांग्रह और गहराई से अध्ययन के आधार पर शोध के लक्ष्य और उपाय तय किए जाएंगे।

साक्षात्कार और आंकलन:
इस चरण में , साक्षात्कार, अन्य तथ्य संग्रह , और डेटा विश्लेषण के माध्यम से शोध की प्रमुख फिंडिंग्स को प्राप्त किया जाएगा।

परिणामों का प्रस्तुतिकरण:

इस चरण में, परिणामों को लेख और उपयुक्त शैली में प्रस्तुत किया जाएगा, जो स्त्री पात्रों की भूमिका में परिवर्तन और उनके महत्वपूर्ण योगदान को विस्तार से व्याख्या करेगा।

संदेश और सुधार:

अंतिम चरण में, शोध के प्रमुख संदेश और सुधार के सुझाव प्रस्तुत किए जाएंगे , जो स्त्री की भूमिका में समाज के रूढ़िवादिता और विकास में एक नई दिशा से सोचने को प्रोत्साहित करेंगे।

अनुभवजन्य जांच की व्याख्या

नारी और समाज का अटूट संबंध होता है। समाज निर्माण का प्रमुख आधार नारी है अर्थात् नारी समाज निर्मात्री है। नारी के बिना मानव समाज की कल्पना करना भी अत्यंत कठिन है। 'समाज' शब्द का प्रयोग मुख्यतः मानव समूह के रूप में किया जाता है। समाज मनुष्य की वह इकाई है जिसमें उसके हित, चिन्तन सुख-दुःख तथा जीवन के व्यवहार समाहित हैं। समाज का समुचित विकास तभी संभव है जब नारी को विकास के समान अवसर प्राप्त हों। यदि नारी को स्वतन्त्र वातावरण प्राप्त हो तो वह संस्कार प्रदत्त करने वाली प्रेरणा शक्ति बन जाती है। नारी हमें समाज में रहना सिखाती है।

वह जीवन का सतत् रूप से विकास करती है। नारी और समाज एक दूसरे पर अवलंबित होते हैं। समाज के माध्यम से हमें जीवन मूल्यों की जानकारी प्राप्त होती है जिसकी अनुपालना कर नारी अपने मानव धर्म को निभाती है। जब नारी के अन्दर सामाजिक सजगता उत्पन्न होती है तो वह समाज के विषय में सोचती है; चिन्तन करती है। सामाजिक जीवन के सभी अंतर्विरोधों को समाप्त करने में सामाजिक चेतना की सक्रिय भूमिका रहती है। सामाजिक चेतना समाज में व्याप्त शोषण वर्ग वैषम्य सामाजिक विकृत्तियों, रूढ़ियों एवं जनजीवन की विषमताओं का न केवल यथार्थ चित्रांकन है, बल्कि आलोŭय युग में इनकी व्यर्थता सिद्ध कर समाज व व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए इनमें आमूल परिवर्तन का स्वर अनिवार्य घोषित करना है।

किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास को जानने और परखने के लिए उस समाज या देश की नारी की स्थिति को जानना बहुत जरूरी है। समाज के उत्थान-पतन में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लेकिन यह अलग बात है कि पुरुष प्रधान समाज अपने झूठे अहम् के कारण इस सŭचाई को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। बदलते समय के अनुसार मनुष्य ही सोच में भी बदलाव आने लगा है। आज की नारी भी परम्परागत नारी से अधिकेत है। वह अपनी मुक्ति के लिए प्रयत्नशील है। समाज में नर-नारी एक दूसरे के पूरक हैं, लेकिन फिर

भी दोनों का स्थान भिन्न रहा है। नारी ने दासता व पराधीनता के अनेक वर्ष देखे हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में वह सदैव शोषण का शिकार रही है। नव जागरण काल आया।

नारी का जीवन के प्रति, अपने प्रति दृष्टिकोण बदला। अब उसने धीरे-धीरे अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व को पहचानना शुरू कर दिया। आज नारी ने समाज को विभिन्न क्षेत्रों में अपने आप को स्थापित किया है, लेकिन उसके इस विकास का अनुपात पुरुष की तुलना में बहुत कम है। आज भी अधिकांश नारियाँ घर की चार दीवारी तक ही सीमित हैं। यदि समाज का ढ़ांचा ठीक करना है तो हमें सर्वप्रथम समाज में नारी की स्थिति में सुधार करना पड़ेगा। आज नारी को निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि शिक्षा के माध्यम से समाज की मानसिकता को उॅचतम बनाया जा सकता है। आज नारी अपनी परम्परागत छवि को पूरी तरह से बदलने का प्रयत्न कर रही है।

समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए नारी को संदेश देते हुए महादेवी कहती हैं - ‘‘भविष्य में भारतीय समाज की क्या रूप रेखा हो, उसमें नारी की कैसी स्थिति हो, उसके अधिकारों की क्या सीमा हो आदि समस्याओं का समाधान आज की जाग्रत् और शिक्षित नारी पर निर्भर हैं। यदि वह अपनी दुरवस्था के कारणों को स्मरण रख सके और पुरुष की स्वार्थपरता को विस्मरण कर सके तो भावी समाज का स्वप्न सुन्दर और साकार हो सकता है। परन्तु यदि वह अपने विरोध को ही चरम लक्ष्य मान ले और पुरुष से समझौते के प्रश्न को ही पराजय का पर्याय समझ ले तो जीवन की व्यवस्था अनिश्चिित और विकास क्रम शिथिल होता जाएगा, क्रांति की अग्रदूत और स्वतन्त्रता की ध्वजाधारिणी नारी का कार्य जीवन के स्वस्थ निर्माण में शेष होगा, केवल ध्वंस में नहीं। नारी समाज का केन्े-बिंदु है।

अतः मानव समाज को चित्रित करने वाले उपन्यासों एवम् कहानियों में नारी-जीवन का चित्रण होना स्वाभाविक है। निराला ने नारी की समस्याओं को अपने कथा-साहित्य में बारीकी से चित्रित किया है। उनकी नारी-चेतना सामाजिक दृष्टि से पुरुष के साथ समानता की पक्षधर है। वे नारी के सामथ्र्य, उसकी अस्मिता, स्वतंत्रता एवम् शक्ति को अहमियत देते हैं। प्राचीन काल से ही ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवताः’ कहकर नारी को सदा ही आदर ही दृष्टि से देखा जाता रहा है। निराला का कथा-साहित्य भी नारी के प्रति सम्मान की भावना से अछूता नहीं है। ‘जानकी’ कहानी में यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी जाति के प्रति निराला के मन में कितना आदर है - ‘‘ऐसी शांत दृष्टि और मंद गति मैंने नहीं देखी जैसी इस स्त्री की, विश्व की समस्त प्रकृति पर विजय हो, जैसे यह सब कुछ जानती है और बिना कहे बहुत कुछ कह रही है।’’

पुरुष-प्रधान सामाजिक व्यस्था में नारी सदा ही शोषण का शिकार रही है। उसे सदा उसके अधिकारों से वंचित रखा गया है, इसलिए निराला के नारी पात्र ऐसी सामाजिक व्यवस्था के प्रति सक्रिय विोह करते हैं तथा पुरुष की प्रताड़नाओं का सामना करते हुए संघर्ष पूर्ण जीवन जीते हैं। अतः नारी को सामाजिक रूप से सक्षम, समर्थ एवं सशक्त बनाकर उन्हें सजग एवं सचेष्ट करना ही निराला के कथा-साहित्य का लक्ष्य प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

इतिहास में एक लंबे समय तक महिलाओं को समान नागरिक नहीं माना गया, उन्हें पुरुष वर्चस्व और नियमों के तहत बुरे व्यवहार, भेदभाव और नस्लवाद का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं के बावजूद, वे उन्हें चुनौती दे सकती हैं और समाज पर खुद को साबित कर सकती हैं।

अतीत में महिलाएँ असमान और अनुचित जीवन जी रही थीं। उन्हें कोई भी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधि करने से रोका जाता था और उनका एकमात्र काम एक गृहिणी होना था जो घर और बच्चों की देखभाल करती थी। उस समय, महिलाएँ पुरुष के नियंत्रण में थीं जो उन सभी क्षेत्रों पर हावी था जिनमें वह शक्ति का प्रतीक था।

इन सभी समस्याओं, दुखों और पीड़ाओं के बाद पूरी दुनिया में महिलाओं ने खुद को बेहतर बनाने और जीवन में अपनी स्थिति बदलने के तरीके खोजने शुरू कर दिए। उन्होंने अपने प्रयासों, सपनों और इच्छाओं को एक साथ जोड़कर एक सार्वभौमिक विचार बनाने की कोशिश की जो दुनिया के किसी भी स्थान की सभी महिलाओं के बारे में बोलता हो। इससे नारीवाद का उदय हुआ।

नारीवाद के आने से महिला अपनी नकारात्मक छवि को बदलने के साथ-साथ अपने अधिकारों को वापस पाने में सक्षम हुई। नारीवाद यह साबित करता है कि महिला भी पुरुषों के समान ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम है। इसके अलावा, नारीवाद का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य महिलाओं को उनकी पूर्ण स्वतंत्रता के साथ-साथ राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं के प्रतिनिधित्व में समान अवसर प्रदान करना था।

यह मामूली काम नारीवाद का एक विस्तृत विवरण देने की कोशिश करता है और यह बताता है कि यह कैसे एक विचार या विश्वास से विकसित होकर मानक लक्ष्यों और सिद्धांतों के साथ एक सिद्धांत बन गया। इस काम का पहला अध्याय सैद्धांतिक था, जिसमें हमने नारीवाद की उत्पत्ति और इसके विभिन्न प्रकारों के अलावा इसकी परिभाषा प्रस्तुत की। यह नारीवाद की कुछ प्रसिद्ध लहरों को

भी प्रस्तुत करता है जिसमें इसने उनमें से प्रत्येक के प्रसिद्ध नेताओं से निपटा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह इसके सिद्धांतों और लक्ष्यों को बताता है। यह अध्याय मुस्लिम और अश्वेत महिला की पीड़ा के बारे में भी बात करता है।

संदर्भ

[1]. अग्रवाल, रुचि. (2014). भारतीय सिनेमा में महिलाओं की बदलती भूमिकाएँ. 14. 145-160.

[2]. बेडे, पॉल. (2015). विकास में महिलाओं की भूमिका. जीजेआरए - अनुसंधान विश्लेषण के लिए वैश्विक पत्रिका. 4.

[3]. सेलिस, करेन और चाइ ल्ड्स, सारा। (2018) । रूढ़िवाद और महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व। राजनीति और लिंग। 14. 5-26. 10.1017/S1743923X17000575।

[4]. दुबे, कृष्णा और सिंह, गंगा (2022). राजनीति और राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भूमिका।

[5]. खैरुल्लाह, खैरुल्ला. (2022)। लिंग द्वंद्व प्रतिरो ध में महिलाओं की सामाजिक भूमिकाओं और कार्यों में परिवर्तन। परिप्रेक्ष्य. 11. 990-996. 10.31289/परिप्रेक्ष्य। v11i3.6536.

[6]. सिंह, गंगा और दुबे , कृष्णा (2024)। भारतीय साहित्य में महिलाओं का चित्रण -एक आलोचनात्मक अध्ययन। 10. 60-68।

[7]. कपूर, राधिका. (2019). समाज में महिलाओं की भूमिकाएँ.

[8]. खेलघाट-दोस्त, हमून और सिबली, सुजिरमन। (2020)। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर पितृसत्ता का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन बिजनेस एंड सोशल साइंसेज। 10. 396-409। 10.6007/IJARBSS/v10-i3/7058।

[9]. वोइगट, काटजा और स्पाइस, माइकल। (2020)। महिला शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन : उत्तरी पाकिस्तान के ऊंचे पहाड़ों में समाज में महिलाओं की भूमिका के बारे में बदलती धारणाएँ। माउंटेन रिसर्च एंड डेवलपमेंट। 40. 10.1659/MRD-JOURNAL-D-20-00028.1।

[10]. बसाक, रितुपर्णा. (2022). समाज में महिला सशक्तिकरण पर शिक्षा की भूमिका.

[11]. अल-वहैबी, अनफाल. (2023). महिला नेतृत्व और सामाजिक विकास: ओमानी संदर्भ में विकल्प और अपेक्षाएँ. 10.1007/978-3-030-87624-1_392-1.

[12]. कैम्पबेल, रोज़ी और चाइल्ड्स, सारा। (2015)। रूढ़िवाद, नारीकरण और यू.के. की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व। ब्रिटिश राजनीति। 10. 148-168. 10.1057/bp.2015.18.

[13]. अकिनवाले, ओलायोम्बो और अकिनवाले, ओलुसेगुन और कुये, ओवोलाबी। (2024)। लिंग, धर्म और राजनीति: कार्य-जीवन की स्थायी गुणवत्ता (क्यूडब्ल्यूएल) में महिलाओं की भूमिका पर एक गुणात्मक विश्लेषण। आईआईएमटी जर्नल ऑफ मैनेजमेंट। 1. 10.1108/आईआईएमटीजेएम-12-2023-0076।

[14]. शौकीन और रुवाली, प्रियंका (2022)। समकालीन भारतीय मीडिया में महिलाओं की स्थिति। 7. 570-576।

[15]. नसीम, बसिरी. (2016). मध्य पूर्व में राजनीतिक नेतृत्व के भविष्य में महिलाओं की भूमिका को परिभाषित करना . स्लोवाक जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंसेज. 16. 10.1515/sjps-2016-0007.